SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

पारसनाथ पहाड़ी का भौतिक भूदृश्य एवं पर्यटन के विकास की संभावना

संतोष कुमार राणा, शोधार्थी, **सरोज कुमार सिंह,** Ph.D., शोध निदेशक, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors

संतोष कुमार राणा, शोधार्थी
सरोज कुमार सिंह, Ph.D.
E-mail : santoshkumarcool83@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/10/2024
Revised on : 18/12/2024
Accepted on : 28/12/2024
Overall Similarity : 01% on 19/12/2024

शोध सार

किसी स्थान के भूतल पर दिखने वाली विशेषताओं और लक्षणों को भूदृश्य कहते हैं। भूदृश्य को समान्यतः दो भागों में विभाजित किया जाता है–भौतिक (प्राकृतिक) भूदृश्य और सांस्कृतिक भूदृश्य। प्राकृतिक भूदृश्य पहाड़, पठार, पहाड़ियाँ, नदियाँ तथा वनभूमि इत्यादि भू आकृतियों का समूह होता है। पारसनाथ पहाड़ी झारखण्ड के गिरिडीह जिले में स्थित पहाड़ियों की एक श्रृंखला है। इसकी सबसे ऊँची चोटी "सम्मेद शिखर" है जो समुद्रतल से 1365 मी० ऊँची है। छोटानागपुर पठार के अंर्तगत पारसनाथ पहाड़ी एक बहुत हीं महत्वपूर्ण भूदृश्य है जो भूगर्भिक दृष्टिकोण से प्राचीन ग्रेनाइट चट्टानों से बना है। यहाँ तृतीय श्रेणी के उच्चावचों के अंर्तगत विभिन्न भूदृश्यों की उपस्थिति है जिनमें खड़ी पहाड़ी ढलान, कगार, शैल विरचनाएं, जलप्रपात, झरना, घाटियां, गुफाएं, वन, उपवन और नाले इत्यादि महत्वपूर्ण हैं। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य पारसनाथ पहाड़ी के भूदृश्य के निर्माण की प्रक्रिया और इसके वर्तमान भूदृश्य अवस्था को समझना तथा यहाँ पर्यटन विकास की संभावनाओं को खोजना है। इस शोध को पूरा करने के लिए पारसनथ पहाड़ी के विशेष संदर्भ में प्राथमिक आँकड़ो के लिए अवलोकन विधि तथा द्वितीयक आँकड़ो हेतु संबंधित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं और इंटरनेट की सहायता लिया गया है। हमारे इस शोधपत्र का महत्व है कि पारसनाथ पहाड़ी के भूदृश्य की सुंदरता को जानते हुए इसको संरक्षित, संवर्द्धित तथा विकसित कर पर्यटन विकास में सहयोगी बनाना।

मुख्य शब्द

भूदृश्य, भू–भौतिक प्रक्रिया, पर्यटन विकास.

परिचय

भूदृश्य को समान्यतः दो भागों में विभाजित किया जाता है–भौतिक भूदृश्य और सांस्कृतिक भूदृश्य। भौतिक

भूदृश्य के अंर्तगत पहाड़, पठार, पहाड़ियाँ, नदियाँ तथा वनभूमि इत्यादि को सम्मिलित किया जाता है। भूदृश्यों का अध्ययन भूगोल में प्राचीन काल से हीं हो रहा है, परन्तु हम्बोल्ट और ब्लॉश महोदय दो ऐसे महान भूगोलवेता हैं जिन्होंने भूगोल में 'भूदृश्य की संकल्पना' के विकास की शुरूआत की। हम्बोल्ट ने लैंडस्केप संकलपना का वर्णन अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'कोसमस' में किया है। इन्होंने मानवीय और सांस्कृतिक पहलुओं पर भूदृश्य के प्रभाव पर जोर दिया और भूदृश्य के समग्र पहलुओं के अध्ययन की शुरूआत की। ब्लाश ने लोंगो के जीवनशैली पर भूदृश्य के प्रभाव का वर्णन किया साथ हीं स्थानीय लोंगो की जीवनशैली और उनके जीवन की दीशा के निर्धारण में भूदृश्य के महत्व को बताया। आगे चलकर बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भूदृश्य की संकल्पना भूगोल में अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में स्थापित हुआ। उस दौरान कार्ल शॉवर भूदृश्य की संकल्पना को लोकप्रीय बनाने का काम किया। इन्होंने अपने लेख 'द मॉरफॉलॉजी ऑफ लैंडस्केप' के माध्यम से भूदृश्य की जर्मन संकल्पना को संयुक्त राज्य अमेरिका में लोकप्रिय बनाया और भूदृश्य को मानव संस्कृति और जैव भौतिक पर्यावरण का उत्पाद माना।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भूगोल में अनेक बदलाव आये। मात्रात्मक क्रान्ति के दौरान 1960 ई. तक भूगोल में भूदृश्य की संकल्पना का विकास अवरूद्ध रहा परन्तु 1970 के दशक के दौरान जब 1967 ई. में लैंडस्केप रिसर्च ग्रुप यरैेंळद्ध का गठन हुआ तो इस क्षेत्र के शोधकर्ताओं को एक महत्वपूर्ण अवसर प्राप्त हुआ। इसके बाद 1972 ई. में नीदरलैंड में Working Community Landscape Ecological Research (WLO) की स्थापना की गई। USA में Barkely School of Geographers और ब्रिटिश भूगोलवेताओं ने PhilosophicalApproach to landscape का विकास किया। 1988 ई. में The InternationalAssociation of Landscape Ecology (IALE) की स्थापना की गई। यह संस्था अंतर्राष्ट्रीय जर्नल निकालती है जो Urban Planning और भूदृश्य की संकलपना के संबधो को बताती है। हाल में Geo Spatial Technology के विकास नेAreal Photograph Settelite Imageries और GIS द्वारा भूगोल में Landscape Research को काफी प्रभावित किया है।

झारखण्ड में स्थानीय स्तर पर किये गये संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

एस. सी. भट्ट महोदय ने 2002 ई. में अपने "The District & Gazetter of Jharkhand" में गिरिडीह जिले के विभिन्न पर्यटन स्थलों का विशेश रूप से वर्णन किया (खण्डोली, पारसनाथ, उसरी जलप्रपात इत्यादि) है।

महेन्द्र कुमार ने 2016 ई० में अपने 'सैर सपाटे के नये ठिकाने, आउटलुक' झारखण्ड, में लिखा है कि गिरिडीह जिला में स्थित पारसनाथ पर्वत झारखण्ड राज्य की अमूल्य सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहर है। यह झारखण्ड का सबसे ऊँची पहाड़ी है तथा जैन धर्मावलंबियों के लिए पवित्र तीर्थस्थल है।

सुनीता देवगम 2017 ई. में "Impact of Ecotourism (Theotourism) on Forest of Parasnath Hill" शीर्शक से अपने Thesis BAU, Ranchi में जमा किया है। इसमें इन्होंने बताया है कि वनों पर पर्यटन का बुरा प्रभाव पड़ रहा है। बावजूद इसके कि वनों के मुख्य भाग पर इसका अधिक प्रभाव नहीं पड़ा है। अध्ययन में इस बात का पता चला है कि पिछले कुछ वर्षों से जीव—जन्तुओं की संख्या में काफी कमी आई है।

शोध समस्या

गिरिडीह जिला झारखण्ड राज्य के उत्तरी छोटानागपुर प्रमण्डल के उत्तर—पूरब दिशा में स्थित है। यह जिला भौगोलिक तथा धार्मिक दृष्टिकोण से झारखण्ड में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ अनेक भौगोलिक (Eco-Tourism) तथा धार्मिक पर्यटन स्थल स्थित हैं परन्तु यहाँ अधिकतर पर्यटन स्थल आज भी स्थानीय स्तर पर ही अपना पहचान बनाये हुए हैं। झारखण्ड में सबसे अधिक घरेलु एक दिवसीय यात्री देवघर जिला का भ्रमण करते हैं (29.5%)। इसके बाद दूसरा स्थान रामगढ़ का आता है, जहाँ 13.1 प्रतिशत घरेलु यात्री यात्रा करते हैं। (स्रोतः Tourism Survey of the State Jharkhand) परन्तु गिरिडीह जिला में पूरे झारखण्ड का मात्र 3.6 प्रतिशत घरेलु पर्यटक ही यात्रा करते हैं। झारखण्ड में दूसरे राज्यों से सबसे अधिक पर्यटक देवघर जिला में आते हैं। पारसनाथ पहाड़ी झारखण्ड की सबसे ऊँची पहाड़ी होने के साथ—साथ पारिस्थितिकीय तथा धार्मिक पर्यटक स्थलों का संगम भी है, बावजूद इसके गिरिडीह जिला में पर्यटन की स्थिति संतोषजनक नहीं है। यहाँ स्थित पारसनाथ पहाड़ी केवल जैन धर्मावलम्बियों के लिए ही आकर्षण का केन्द्र रहा है। अतः गिरिडीह जिला को एक पर्यटन हब बनाना एक बड़ी

चुनौती है। यहाँ अनेक पर्यटक स्थल ऐसे हैं जो आधारभूत संरचनाओं के विकास की राह देख रहे हैं। इस संदर्भ में पारसनाथ पहाड़ी को केन्द्र में रखते हुए गिरिडीह जिला के अंतर्गत विभिन्न भौगोलिक पर्यटन स्थलों के उद्भव एवं उनके विकास की संभावनाओं का पता लगाना शोधार्थी की शोध समस्या है।

वर्तमान शोध का महत्व

वर्तमान शोध का अनेक सामाजिक, धार्मिक, प्रशासनिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण से महत्व है। शोध के माध्यम से गिरिडीह जिला में वहाँ के पर्यटन स्थलों के उद्भव तथा उनके विकास की संभावनाओं को तलाश कर पारसनाथ पहाड़ी के भौतिक भूदृश्यों की महत्ता को समझ सकते हैं जो झारखण्ड में पर्यटन को विकसित करने में मील का पत्थर साबित हो सकता है। शोध प्रशासनिक समस्याओं की बाधाओं को दूर करने में सार्थक कदम हो सकता है, क्योंकि शोध द्वारा हम यह जान सकेंगे कि पारसनाथ पहाड़ी के किन स्थलों पर श्रद्धालुओं तथा पर्यटकों की कितनी संख्या होती है तथा उनकी परेशानियाँ क्या होती है। कानून–व्यवस्था को बनाये रखने में भी यह महत्वपूर्ण हो सकता है। यह शोध गिरिडीह जिला में आर्थिक तंत्र के लिए भी सार्थक हो सकता है, क्योंकि पर्यटन स्थलों पर लोगों की काफी संख्या होती है। लोगों को विभिन्न प्रकार के रोजगार मिल सकते हैं जैसेः होटल, परिवहन, पूजा सामग्री के दुकान तथा अन्य मनोरंजन के साधनों का विकास इत्यादि।

अध्ययन क्षेत्र

हमारे अध्ययन क्षेत्र पारसनाथ पहाड़ी में अनेक भौतिक भूदृश्य देखने को मिलते हैं। पारसनाथ पहाड़ी क्षेत्र झारखण्ड के गिरिडीह जिला में छोटानागपुर के पठार पर उपस्थित एक बहुत हीं महत्वपूर्ण द्वितीय श्रेणी की स्थलाकृति है जो $23^0$55'' से $24^0$20'' मिनट उत्तरी अक्षांश एवं $86^0$05'' से $86^0$13'' मिनट पूर्वी देशांतर के बीच पूर्व से पश्चिम 10.50 किमी. की लम्बाई और उत्तर से दक्षिण 7 किमी. की चौड़ाई में 49.33 वर्ग किलो मीटर क्षेत्रफल पर फैला हुआ है। पारसनाथ की प्राकृतिक विविधता और सुन्दरता प्राचीन काल से हीं लोगों को अपनी ओर अकर्षित करता रहा है। यहाँ उपस्थित विभिन्न शिखर, झरनें, झरनों के संगम, जलप्रपात, विशाल चट्टानें, घाटियां, सीढ़ीनुमा पहाड़ियां, खाई, वन, पहाड़ी ढलान तथा झील इत्यादि भौतिक भूदृश्य लोगों के मन को मोह लेते हैं। पारसनाथ पहाड़ी के गोद में बसा मधुबन, प्रकृति का सुन्दर पालना है। प्रकृति के विविध सौंदर्य से, विविध रूप रंगो से सुदर्शन बना हुआ यह एक आकर्षक भूभाग है। यहाँ का भूदृश्य ऐसा है कि मधुबन पारसनाथ पहाड़ी का मस्तक प्रतीत होता है और समवेद शिखरजी मुकुट प्रतीत होते हैं। यह दृश्य लागों को यहाँ आने के लिए आकर्षित करता है।

चित्र 1: भारत के नक्शे पर पारसनाथ की स्थिति

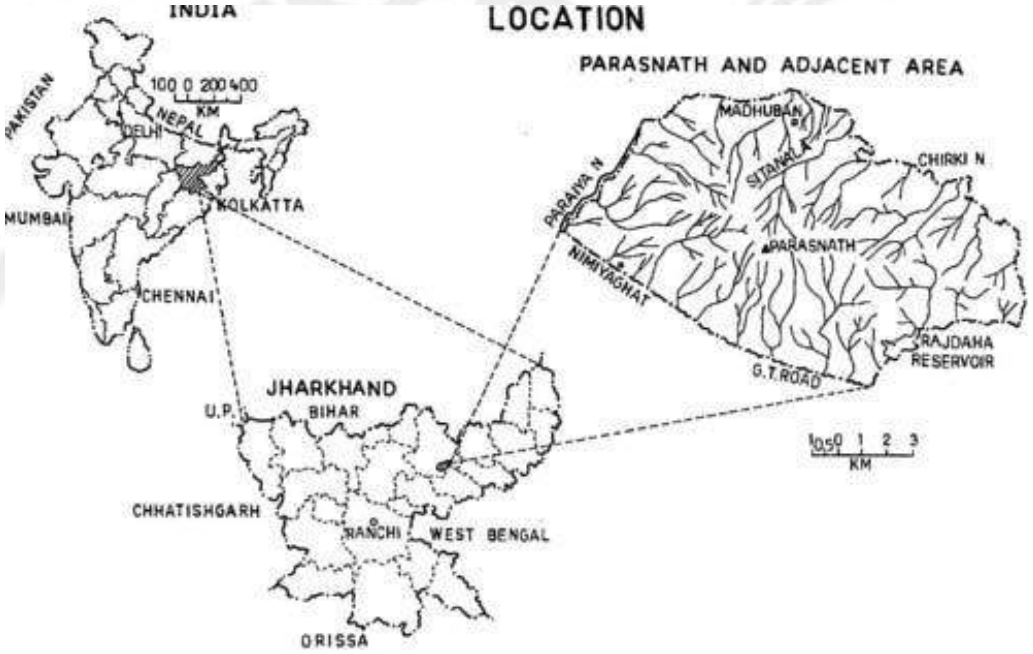

*(**स्रोतः** Plant Diversity and ethno botany at mount Parasnath and AdjacentArea, Yadav Ram Bilas-2017)*

शोधपत्र का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैः

- पारसनाथ पहाड़ी में स्थित विभिन्न भौतिक भूदृश्यों के निर्माण प्रक्रिया का पता लगाना और उनके ऐतिहासिक विकास को जानना।
- पारसनाथ पहाड़ी में स्थित विभिन्न भौतिक भूदृश्यों के संदर्भ में पर्यटन के विकास की संभावनाओं का पता लगाना।

शोध प्रश्न

उपरोक्त शोध उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित शोध प्रश्न हैंः

- गिरिडीह जिला के अंर्तगत पारसनाथ पहाड़ी में विद्यमान भौतिक भूदृश्यों के उद्भव का अपना इतिहास एवं भूगोल क्या हैं?
- क्या पारसनाथ पहाड़ी क्षेत्र में भौतिक भूदृश्यों की पहचान कर तथा सुनियोजित विकास कर और पर्यटकों की संख्या बढ़ाकर रोजगार सृजन किया जा सकता है?

शोध विधियाँ

इस शोध को पूरा करने के लिए शोधार्थी धार्मिक केन्द्रों से परिपूर्ण गिरिडीह जिले में स्थित पारसनाथ पहाड़ी के विशेश संदर्भ में Case Study Method का प्रयोग करते हुए, अंतर्वीक्षा (Interview) एवं अवलोकन विधि (Observation Method) का सहारा लिया है। द्वितीयक आँकड़ों हेतु झारखण्ड पर्यटन विभाग के साथ–साथ अन्य पुस्तकों एवं ऐतिहासिक ग्रन्थों से सूचनाएँ प्राप्त किया है। आँकड़ों का विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय एवं मानचित्रीय विधि का उपयोग किया है।

अध्ययन विषय अंर्तगत परिणाम एवं विवेचना

पारसनाथ पहाड़ी का भूगर्भिक इतिहास या विकास

झारखण्ड का भूगर्भिक इतिहास उतना हीं प्राचीन है जितना की पृथ्वी के प्रथम भूपृष्ठ का इतिहास। यहाँ आर्कियन क्रम की चट्टानों से लेकर नवीनतम चतुर्थ कल्पकालीन जलोढ़ निक्षेपण तक पाये जाते हैं। झारखण्ड का लगभग 90 प्रतिशत भूभाग का निर्माण पैतृक चट्टानों अर्थात् आर्कियन ग्रेनाइट,नीस और धारवाड़ चट्टानों से हुआ है। पारसनाथ की पहाड़ियों और इसके आस–पास के क्षेत्रों का निर्माण प्राचीन आर्कियन क्रम के हीं आग्नेय चट्टानों से हुई है इसलिए इसके अधिकांश क्षेत्र अत्याधिक दाब और रूपांतरण का अनुभव किया है। फलस्वरूप यहाँ ग्रेनाइट व नीस की चट्टानें पाई जाती है। टर्शियरी कल्प के पहले झारखण्ड भूमि समप्राय मैदान के रूप में था जिसका पुनर्युवन (Rejuvenation) हुआ और फिर यहाँ सीढ़ीनुमा धरातल और अनेक पहाड़ियों का निर्माण हुआ। इसी क्रम में हिमालय के निर्माण के दौरान मध्य मायोसीन और प्लीस्टोसीन काल में पारसनाथ पहाड़ी का उत्थान हुआ जो आज एक अवशिष्ट पहाड़ी के रूप में विराजमान है। वस्तुतः पारसनाथ पहाड़ी एक अपरदनात्मक पहाड़ी है जो कठोर आग्नेय चट्टानों की संहती (Mass) के अवशिष्ट के रूम में विद्यमान हैं और जिसका निर्माण कठोर चट्टानों वाले पहाड़ी के साथ रहे मुलायम चट्टानों के लाखों–कराड़ों वर्षों के बर्हिजात बलों के कटाव के कारण हुआ है। यह पहाड़ी उष्ण कटिबंधीय जलवायु के अंतर्गत आता है जहाँ पतझड़ वनों एवं अन्य वनस्पतियों का विकास हुआ है। अभी भी इसपर कटाव हो रहा है तथा तृतीय श्रेणी के स्थलरूपों का क्रमिक विकास भी हो रहा है। आज यहाँ ये स्थलरूप पर्यटन के संसाधन के रूप में मौजुद हैं जो प्राचीन काल से लोगों को आकर्षित करते रहे हैं।

चित्र 2: झारखण्ड की भूगर्भिक संरचना

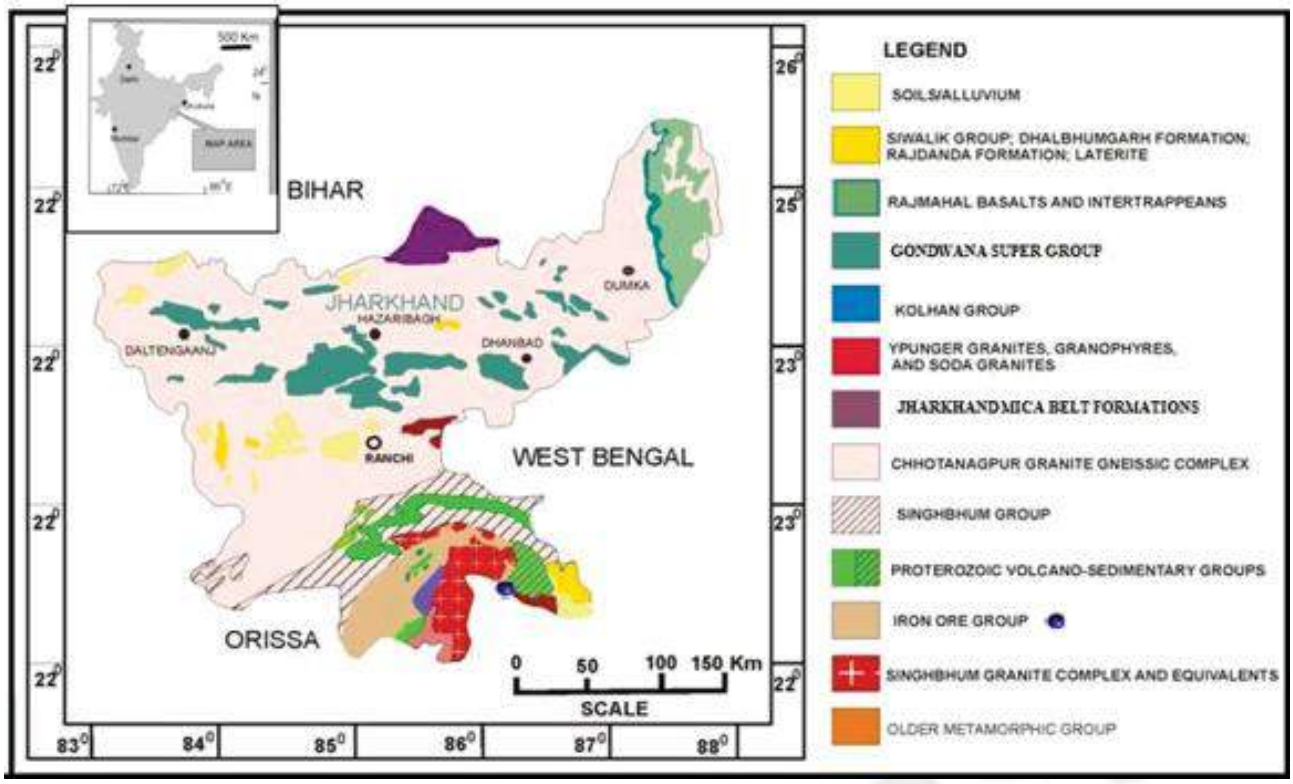

(**स्त्रोत**:https://image.app.goo.gl)

इन भूदृश्यों में यहाँ का उच्चावच, विभिन्न शिखर, झरनें, जलप्रपात, झरनों का संगम, झील, विशाल चट्टानें, घाटियां, चट्टानी क्लिफ और रीज, सीढ़ीदार या सीढीघ्नुमा पहाड़ियां, खाई, गुफाएं, पहाड़ी ढलान, कगार, झरनों का उद्गम स्थान, भूस्खलित क्षेत्र, वन क्षेत्र, विभिन्न मृदाएं, जल विभाजक क्षेत्र तथा नदी द्रोणी इत्यादि महत्वपूर्ण हैं। इनकी व्याख्या निम्न प्रकार से है:

1. **उच्चावच**: किसी भौतिक भूदृश्य पर उच्च और निम्न दो बिंदुओं के बीच के अंतर को उच्चावच कहते हैं। उच्चावचों का निर्माण या विकास प्लेट टेक्टोनिक क्रिया से संबधित है। पारसनाथ क्षेत्र में समुद्र तल से ऊँचाई इसरी बाजार से निमियाघाट तक 270 मी. से 300 मी. तक मिलता है। मधुबन, पारसनाथ पहाड़ी के तलहटी के पास ऊँचाई 400 मी. हो जाता और इसके बाद क्रमशः ऊँचाई बढ़ती जाती है जो सम्मेद शिखरजी के पास 1365 मी. हो जाता है। झारखण्ड की यह सबसे ऊँची चोटी है जो सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। इस प्रकार के ऊँचे स्थान सुन्दर लगते हैं जो लोगों को अपनी ओर आकर्शित करते हैं जिसके अनेक कारण हैं जो निम्नलिखित हैं:

   अ. लुभावने दृश्य: यहाँ ऊँची चोटियाँ, हरी–भरी घाटियाँ और पहाड़ियों की सुंदरता अद्वितीय है। इन्हें निहारते हुए लोग सैर करते हैं और आनंद लेते हैं। यहाँ से लोग हर दिशा में मीलों तक देख सकते हैं। यह नजारा हमें ऊँचाई से हीं मिल पाता है। यहाँ से सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य अद्भूत होते हैं।

   ब. ताजी हवा का आनन्द: ऊँचे पहाड़ियों पर प्रदूषण से मुक्त ताजी और स्वच्छ हवा मिलता है जिससे लोग गहरी सांसे ले सकते हैं और जंगल की प्राकृतिक खुशबू का आनंद ले सकते हैं। इससे लोग तरोताजा और अपने को पुनर्जीवित महसूस करते हैं।

उपरोक्त के अलावे ऊँचाई लोगो को साहसिक कार्यो, व्यायाम, प्रकृति से जुड़ाव, शांत वातावरण, चिंतन के लिए आदर्श स्थान तथा मौन का आनंद लेने इत्यादि के दृष्टिकोण से भी आकर्षित करते हैं।

चित्र 3: पारसनाथ और आस–पास का क्षेत्र

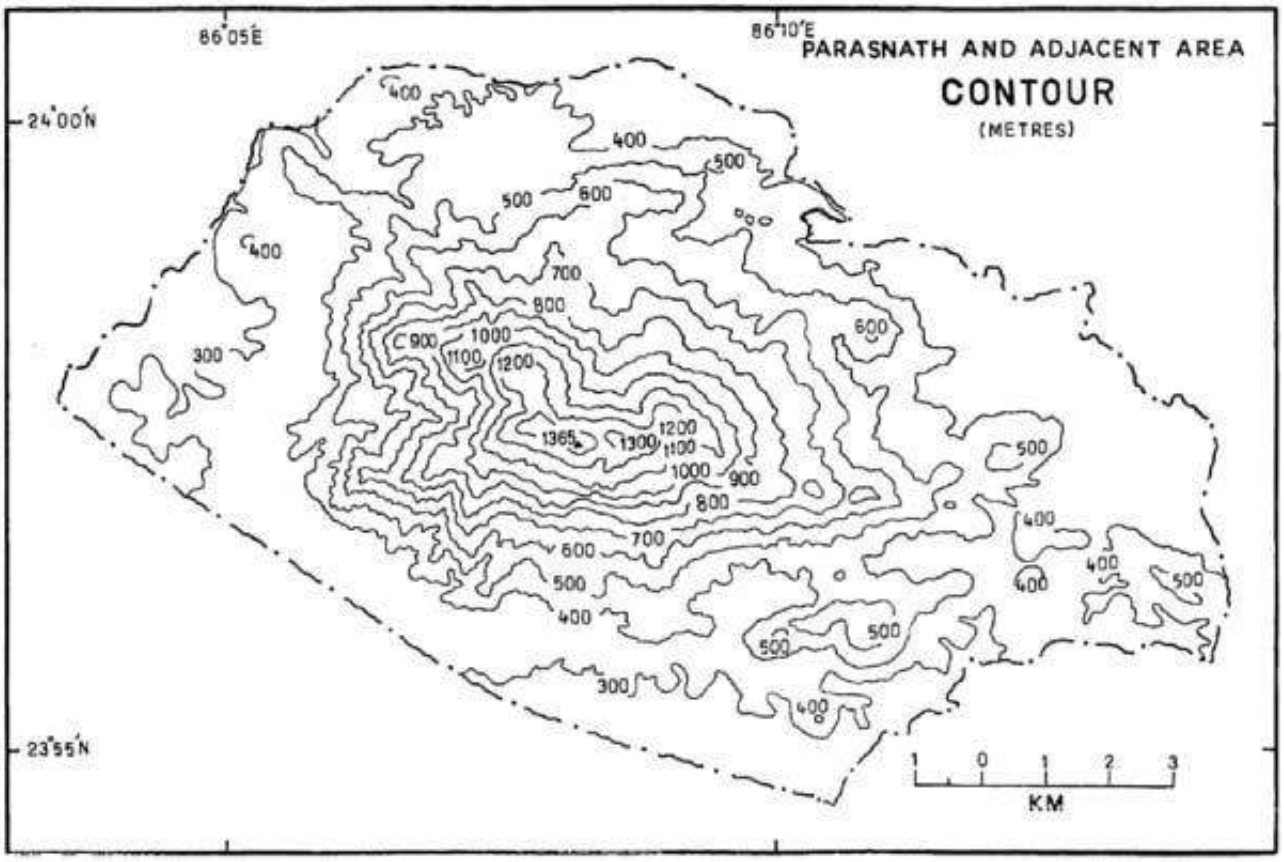

(स्रोतः Plant Diversity and ethno botany at mount Parasnath and Adjacent, Area, Yadav Ram Bilas-2017)

Table 1: Areal Distribution ofAltitudinalZ ones over ParasnathAndAdjacentArea

Height (m)	Frequency	(km²)	Area %	(cum%)
<450	10	25.60	19.23	19.23
450–600	15	38.40	28.85	48.08
600–750	10	25.60	19.23	67.31
750–900	03	7.70	5.79	73.10
900–1050	04	10.20	7.66	80.76
1050–1200	04	10.20	7.66	88.42
1200–1350	05	12.80	9.63	98.05
1350>	01	2.60	1.95	100.00
Total	52	133.00	100.00	

(स्रोतः Plant Diversity and ethno botany at mount Parasnath and Adjacent Area, Yadav, Ram Bilas-2017)

गोलाकार शिखरयुक्त पहाड़ी

पारसनाथ पहाड़ी क्षेत्र उच्चावच के दृष्टिकोण से झारखण्ड का एक महत्वपूर्ण भौतिक भूदृश्य है जो गोलाकार अनेक शिखरों से युक्त पहाड़ी है। यह आसपास की भूमि से उठी हुई है जिसके शिखर अधिक गोल हैं। पहाड़ियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता होती है कि इनका शिखर पहाड़ों के शिखर के तुलना में अधिक गोल होते हैं। पारसनाथ पहाड़ी मूलतः एक आर्कियन काल के अन्तःवेधन है जो ऑजाइट–इन्साइट नीस चट्टानों से बनी है। इसके कठोर चट्टानी संहति अपरदन से बची रह गई जबकि इसके आसपास मुलायम चट्टानें कटकर बह गई। अपरदन के कारण शिखर क्षेत्र नुकीला बन गया है जिसे शिखर कहते हैं। पारसनाथ पहाड़ी पर चार महत्वपूर्ण शिखरों की उपस्थिति मिलती हैं जिसमें दो शिखर सबसे महत्वपूर्ण हैं। सबसे प्रमुख चोटी सम्मेद शिखरजी है और दुसरा महत्वपूर्ण शिखर

चन्द्रप्रभु है जो शिखरजी से पूर्व दिशा में स्थित है। ये चोटियाँ यहाँ आकर्षण को बढ़ा देती हैं।

विशाल चट्टानें

यहाँ आर्कियन क्रम की ग्रेनाइट नीसिक चट्टानों की बहुलता है जिनका निर्माण अत्याधिक ताप और दाब के फलस्वरूप हुआ हैं। पारसनाथ पहाड़ी पर अनेक विशलकाय चट्टानों की उपस्थिति पाई जाती है जिसमें हथिया पत्थर का नाम उल्लेखनीय है। इसे काला पत्थर भी कहा जाता है। यह चट्टान काफी विशाल है और प्रचीन ग्रेनाइट चट्टान से निर्मित है। इसकी ऊँचाई 21 फीट तथा परिधि 30 फीट है। यह चट्टान पहाड़ी पर चार पहिया वाहन वाले रास्ते में स्थित है और इस रास्ते जो भी यात्री या पर्यटक गुजरता है वह यहाँ जरूर रूकता है।

घाटियाँ

घाटी दो पहाड़ियों या कटकों के बीच भूमि का निम्न क्षेत्र होता है जो एक नदी या हिमानी के पार्श्व अपरदन के परिणामस्वरूप बनती है। घाटियों का निर्माण मुख्यता नदियों या धाराओं के अपरदन क्रिया द्वारा होता है। कुछ घाटियों का निर्माण हिमानी अपरदन द्वारा भी हुआ है। पारसनाथ पहाड़ी में घाटियों का नि.र्माण इस पर बहनें वाली विभिन्न झरनों के अपरदन क्रिया द्वारा हुआ है। पारसनाथ पहाड़ी पर अनेक घाटियों की उपस्थिति मिलती है। सम्मेद शिखर से चारो दिशाओं में घाटियाँ मौजूद है। हथिया पत्थर से पूर्व की ओर स्थित विशाल घाटी की तुलना शिमला के ग्रीन वैली से की जा सकती हैं। यह बहुत हीं मनोरम दृश्य प्रस्तुत करती है।

पहाड़ी ढलान

ढाल, ढलान का माप है। ढाल इस बात की माप है कि ढलान कितनी तीव्र या मंद है। ढालों को मुख्यता मंद, खड़ा, अवतल, उतल एवं तरंगित भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के ढालों की समोच्च रेखा एक विशिष्ट अंतराल की पद्धति को दर्शाता है। ढाल को डिग्री या कोण में भी व्यक्त किया जा सकता है। पारसनाथ में तलहटी से लेकर ऊँचाई तक पहाड़ी ढलान मिलते हैं। पारसनाथ पहाड़ी का ढाल सम्मेद शिखर से उत्तर दिशा में (मधुवन की ओर) 14^0, दक्षिण में एन. एच. 2 की ओर 20^0, पूर्व की ओर 8^0, तथा पश्चिम दिशा की ओर 12^0 है। पहाड़ी शिखर अवलोकन (Hill Top View) के दौरान ये सुन्दर उतार के रूप में दिखता है जो ट्रैकिंग के लिए आमंत्रित करता है और ऐडवेंचर टूरिज्म को प्रोत्साहित करता है। यात्रीगण ढलान पर बने पगडंडियों के सहारे यात्रा करते हैं जिसकी लम्बाई तलहटी से शिखर तक 9 किमी. है। इस दूरी की यात्रा चढ़ने के दौरान पैदल तय करने में लगभग 3 घंटे का समय लगता है साथ हीं शिखर से नीचे उतरने में लगभग 2–5 घंटे और विभिन्न मंदिरों का दर्शन तथा प्राकृतिक सुंदरता का आनंद उठाने में लगभग 3 तीन घंटे का समय लगता है। इस प्रकार किसी पर्यटक या यात्री को यहाँ पैदल पर्यटन करने में लगभग 9 घंटे का समय लगता है। पहाड़ी पर चढ़ने के लिए लोग यहाँ डोली का भी उपयोग करते हैं परंतु यह काफी खर्चिला होता है।

कगार

पहाड़ी पर अनेक तीक्ष्ण ढलान हैं जो यहाँ कगार की उपस्थिति को प्रदर्शित करता हैं। यहाँ कटरसता से ऊपर शिखरजी तक तीक्ष्ण ढलान मिलते हैं। इसे यहाँ एडवेंचर टूरिज्म के रूप में विकसित किया जा सकता है।

गुफा

पारसनाथ पहाड़ी में अनेक रॉक सेल्टर गुफाओं की स्थिति मिलती है। यहाँ अनिल झील के पास स्थित गुफा 8 फीट लम्बी है। डाकबंगला से 1.5 किमी. पहले स्थित गुफा की लम्बाई लगभग 25 फीट है। सबसे बड़ी गुफा शिखरजी पर स्थित गुफा मंदिर है।

भूस्खलित क्षेत्र

पहाड़ी पर अनेक भूस्खलन के मलबा दृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ भूस्खलन का कारण ताप और दाब के कारण चट्टानों का टूटना, अपरदन और अपक्षय तथा वर्षा के दौरान जल के दबाव और गुरूत्वाकर्षण का प्रभाव है। पारसनाथ

एक अवशिष्ट पहाड़ी का उदाहरण प्रस्तुत करता है। पारसनाथ की ऊँचाई कम होने में यहाँ भूस्खलन भी एक कारण हो सकता है। यहाँ तीन स्थानों पर भूस्खलन हुए हैं परन्तु सबसे गंभीर बात यह है कि शिखरजी के नजदीक हाल हीं में भूस्खलन हुआ है। यह डार्क टूरिज्म के अंर्तगत आ सकता है जिसमें प्रकृति की शक्ति का साक्षात् दर्शन होता है।

डेगा पहाड़ी

यह मधूबन से पश्चिम की ओर लगभग 2 किमी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ कैरा झरना है जिसपर चेक डैम बना है। यह इसरी से लटकटो जंगल हाते हुए एक किमी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ पिकनिक स्पॉट बना कर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।

2. अपवाह भूदृश्य

झरना

जब किसी क्षेत्र से जल लगातार बाहर निकलते रहता है तो उसे झरना कहते हैं। झरनों का जल जब आगे की ओर प्रवाहित होने लगता है तो वहाँ नालों का विकास होता है। पारसनाथ पहाड़ी पर अनेक झरनों की स्थिति मिलती है जो बहुत हीं मनोरम हैं। झरनों को यहाँ 'नाला' या 'जलधारा' भी कहा जाता है। इन झरनों में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं:

सीता झरना

इस जलधारा या झरना का उद्गम स्थल 'साहब डाड़ी' है जो पारसनाथ पहाड़ी पर तीर्थंकरों के निर्वाण भूमि के उत्तरी भाग पर स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 1100 मीटर है। सीता जलधारा ''साहब डाड़ी'' से निकलकर उत्तर–पूर्व दिशा में प्रवाहित होती है। इस जलधारा के ऊपरी भाग पर अनेक छोटी–छोटी जलधाराएँ आकर मिलती हैं जिनमें चौपड़ा धारा, चंदा धारा तथा गंधर्व धारा इत्यादि प्रमुख हैं।

गंधर्व झरना

इसकी उत्पति गंधर्व निर्झर से हुई है। यह झरना सदानीरा है परंतु ग्रीष्म ऋतु में इसकी धारा अत्यन्त मंद पड़ जाती है। कैरा झरना, पुरी नाला, जोकी नाला तथा गीति नाला इत्यादि अन्य झरनें महत्वपूर्ण है।

जलप्रपात

किसी नदी तल पर काफी ऊँचाई से पानी का अचानक ऊर्ध्वाधर गिरना जलप्रपात कहलाता है। कभी–कभी जलप्रपात सोपानी धारा के रूप में गिरता है, जिसे रैपिड कहा जाता है।

जलप्रपात, नदी अपरदन से निर्मित एक अपरदनात्म स्थलाकृति है। इसका निर्माण तब होता है जब नदी अपने प्रवाह मार्ग में ऊँचे स्थान से नीचे की ओर तीव्र गति से किसी खड़ी ढाल के सहारे गिरती है और जब मुलायम चट्टानें कट कर बह जाती है और कठोर चट्टाने स्थिर रहती हैं। पारसनाथ पहाड़ी क्षेत्र में जो झरनें बहती है, उन पर अनेक जलप्रपातों की स्थिति देखने को मिलती है। यहाँ सीता नाला पर लगभग दस झरनों का विकास देखने को मिलता है, परंतु किसी जलप्रपात का नामकरण नहीं हुआ है।

झील

टेक्टोनिक हलचलों से जब धरातल पर दरारें बन जाती हैं और जब इन दरारों में पानी भर जाता है तो प्राकृतिक झीलों का विकास होता है साथ हीं हिमनद क्रिया द्वारा भी झीलों का निर्माण होता है। पारसनाथ पहाड़ी क्षेत्र में एक झील प्रसिद्ध है जिसका नाम अनिल झील है, परन्तु यह कोई झील नहीं है अपितु सीता नाला पर स्थित एक जलप्रपात है जो 190 फीट गहरा है। इसे स्थानीय लोग विशाल गड्ढा कहते हैं जिसमें पानी नहीं रूकता है। बहुत पहले यहां भगवान महाबीर की एक मूर्ति होती थी जिसे देखने लोग आते थे और यहाँ पूजा अर्चना करते थे। उन्हीं लोगों में से एक व्यक्ति था अनिल जो वहाँ दर्शन करने गया और गिर गया तब से इस स्थान को अनिल झील कहा जाने

लगा। यह झील मधुबन से लगभग 3.5 किमी० की दुरी पर स्थित है।

उपरोक्त अपवाह भूदृश्य यहाँ पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पर्यटक पिकनिक स्पॉट के रूप में इन्ही अपवाह भूदृश्यों वाले स्थानों को चुनते हैं। लोगों की भीड़ यहाँ नये वर्ष में काफी बढ़ जाती है।

3. मृदा

धारातल का सबसे ऊपरी परत जिसमें पोषक पदार्थ पाये जाते हैं और जिसमें पौधों को उत्पन्न करने की क्षमता होती है, मृदा कहा जाता है। मृदा का निर्माण मृदा परिच्छेदिका से संबधित है जिसमें आधारी चट्टान की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है।

पारसनाथ पहाड़ी पर विभिन्न प्रकार की मृदाएँ मिलती है जिनमें–लेटेराइट मृदा, लाल मृदा तथा सैंडी मृदा प्रमुख हैं। इस पहाड़ी के ऊपरी भागों में जहां वर्षा अधिक होती है वहाँ लिचिंग की क्रिया से लेटेराइट मृदा का निर्माण हुआ है। पहाड़ी के अधिकांश भाग में और सबसे अधिक क्षेत्रफल पर लाल मृदा का विस्तार मिलता है। इस मृदा का विकास यहाँ के चट्टानी विशेशताओं के अनुरूप हुआ है। पहाड़ी के तलहटी क्षेत्रों में जहाँ झरनें या नालें बाहर निकलकर नदियों से मिलती है वहाँ सैंडी या बलुई मृदा मिलती हैं। इस प्रकार यह शैक्षिक पर्यटन हेतु अनुकूल जगह है। अतः यहाँ शैक्षनिक परिभ्रमण से संबंधित अध्ययन का विकास किया जा सकता है।

4. वन क्षेत्र

इस पहाड़ी क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के वन मिलते हैं जिनमें उप–उष्णकटिबंधीय पहाड़ी वन, आर्द्र पर्णपाती वन, आर्द्र और शुष्क प्रायद्वीपीय साल वन तथा शुष्क मिश्रित पर्णपाती वन महत्वपूर्ण है। यहाँ 1200 मीटर से अधिक ऊँचाई पर उप–उष्णकटिबंधीय पहाड़ी वन मिलते हैं। निचले भागों में आर्द्र पर्णपाती वन मिलते हैं। इन वनों में जैव विविधता की प्रचुरता है। यहाँ विशेष प्रकार की जड़ी–बूटियाँ पायी जाती है। भारतीय वनस्पति सोसायटी के जर्नल 1955,34(3):196–206, में राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान, लखनऊ के जे. जी. श्रीवास्तव ने 39 वृक्षों, 35 झाड़ियों, 28 लियनों और बेलदार झाड़ियों, 3 आर्किड, 4 मिस्टलेटो और 145 वार्शिकों की मौजुदगी सूचित की है। यहां पशु–पक्षियों में चीतल (AxisAxis), बनैला सूअर (Sus scrofa), लकड़बग्घा, काला भालू (Ursus Americanus), बंदर कोतरा, सियार (CanisAureus), साही पैंगोलिन, खरगोश (Cepus Europaeus), जंगली बिल्ली (Felis Silvestris), तथा हिरण और तेंदुआ (Panthera Pardus) इत्यादि की उपस्थिति मिलती है परन्तु इनकी संख्या वर्तमान में काफी घट गयी है। पक्षियों में सरपेंट ईगल (Spilornis Cheela), कठफोड़वा (Picinea), किंगफिशर (Alcedoatthis), पैराडाईस फ्लाईकैचर, मोर, कोयल (Eudy-namysScolopaceus), बगुला (Ardeidae), कौआ (Corvus), गोरैया (Passeridae) इत्यादि के नाम उल्लेखनीय है। यहाँ जैव विविधता की महत्ता को देखते हुए भारत सरकार ने पारसनाथ को वन्यजीव अभ्यारण्य घोषित किया है।

चन्दन बगानः यह बगान मधुबन से पहाड़ी के पगडंडी से होकर पूर्व दिशा की ओर लगभग 3 किमी० दूरी पर स्थित है। वर्तमान में यहां चंदन के पेड़ समाप्त हो चुके हैं। यह क्षेत्र चंदन के पेड़ों के उगने के अनुकूल है। अतः इसे चंदन के नए पौधे लगाकर विकसित किया जा सकता है।

आम बगानः यह बगान मधुबन से पहाड़ी के पगडंडी से होकर पूर्व दिशा की ओर लगभग 5 किमी. दूरी पर स्थित है। वर्तमान में यहां अधिकांश आम के पेड़ मर चुके हैं और जो बचे हैं उनमें अधिकतर बुढ़े हो गये हैं। यहाँ आम के नए पौधे लगाकर इसे विकसित किया जा सकता है।

फूली बगानः यहां फूलों की खेती होती थी। यह बगान रास्तों के सहारे विकसित थे। वर्तमान में यह समाप्त हो चुका है। यहां फूलों की खेती और चाय की खेती अंग्रेजों द्वारा की जाती थी। फूलों की खेती के लिए कम पानी की आवश्यक्ता होती है। अतः यहां इसे पुनः विकसित कर पर्यटकों को आकर्षित करना आसान होगा।

चाय बगानः पहले यहाँ चाय उत्पादन के लिए आवश्यक भौगोलिक दशाएं मौजुद थी इसलिए यहाँ चाय बगान विकसित था। वर्तमान में यहाँ चाय बगान तो नहीं है पर इसका नाम है। अभी इस स्थान पर सुरक्षा बलों

का कैंप बना हुआ है। यह स्थान चाय के उत्पादन के लिए उपयुक्त हो सकता है। इसे पुनः चाय बागान के रूप में विकसित किया जा सकता है। इको–टूरिज्म के लिए इस प्रकार के बागान बहुत अच्छे स्पॉट हो सकते हैं।

मूल्यांकन एवं समस्याएँ

पारसनाथ पहाड़ी झारखण्ड के सबसे प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। यह पहाड़ी धार्मिक और प्राकृतिक सुंदरता दोना दृष्टिकोणों से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। गिरिडीह जिला में राज्य का मात्र 3.6 प्रतिशत एक दिवसीय घरेलु पर्यटक यात्रा करते हैं जो संख्या के दृष्टिकोण से देवघर और रामगढ़ की तुलना में काफी कम है। गिरिडीह में पारसनाथ सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। अतः इसे पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित करने की आवश्यक्ता है। अभी तक यह पहाड़ी केवल जैन धर्मावलम्बियों के लिए हीं आकर्षण का केन्द्र रहा है बावजूद इसके कि यहाँ दुसरे धर्म के लोग भी बड़ी संख्या में यात्रा करते हैं जिनके लिए आकर्षण का केन्द्र बिन्दु इस पहाड़ी का भौतिक भूदृश्य और यहाँ का पारिस्थितिकीय आकर्षण होता है। अतः यहाँ के भौतिक भूदृश्यों की पहचान कर उन्हें विकसित करना अच्छा होगा। इस संदर्भ में अनेक समस्याएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं जिनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं:

1. पारसनाथ वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप में घोषित है, अतः यहाँ किसी प्रकार के निर्माण कार्य में विभिन्न नियमों से सबंधित समस्याएँ आ सकती है।
2. इस क्षेत्र को पर्यटन स्थल घोषित करने के सरकार के निर्णय को जैन समाज ने विरोध किया है।
3. यहाँ पर्यटन के विकास के लिए बड़े बजट की आवश्यक्ता होगी जो एक बडी चुनौती है।
4. जैवविविधता के दृष्टिकोण से यह एक धनी क्षेत्र है अतः इसे बचाकर रखना एक बड़ी चुनौती है।
5. पारसनथ पहाड़ी को जैन समाज अपना सबसे महत्वपूर्ण तीर्थस्थल मानते हैं। अतः यहाँ की पवित्रता बनाये रखना एक बड़ी समस्या है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

झारखण्ड में पारसनाथ पहाड़ी पर्यटन के दृष्टिकोण से अपना विशेष स्थान रखता है। यह झारखण्ड की सबसे ऊँची पहाड़ी है जो प्राकृतिक सुंदरता से भरा है। झारखण्ड के सबसे ऊँचा क्षेत्र के रूप में इसे गौरव प्राप्त है। जैव विविधता के दृष्टिकोण से भी यह महत्वपूर्ण है। धार्मिक दृष्टिकोण से यह पहाड़ी विश्व प्रसिद्ध है साथ हीं यहाँ यात्रियों को अनेक सुविधाएँ भी प्राप्त है जैसेः राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 2, इसके समीप से गुजरता है जो पर्यटकों के पहुँच को आसान बना देता है। हजारीबाग रोड रेल मार्ग की सुविधा इसे प्राप्त है। पहाड़ी पर सुरक्षा व्यवस्था की पुख्ता व्यवस्था है। सुरक्षा बलों की चार कंपनीयाँ यहां लगी हुई है। यहाँ ठहरने के लिए एकोमोडेसन की सुविधा प्राप्त है। मधुबन में बाजार की सुविधा है जहाँ हर जरूरी सामान मिल जाते हैं। यात्रियों के लिए पहाड़ी पर चढ़ने हेतु डोली की सुविधा है। यहाँ प्राकृतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक तीनों प्रकार के आनन्द प्राप्त किये जा सकते हैं। ये सभी परिस्थितियाँ पर्यटन के लिए यहाँ लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। अतः पर्यटन के विकास की यहाँ अपार संभावनाएँ है। इस संदर्भ में भारत सरकार, पर्यावरण, वन और जलवायु परिर्वतन मंत्रालय(वन्य जीव प्रभाग) के कार्यालय ज्ञापन, दिनांक 05 जनवरी, 2023 को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित सुझाव महत्वपूर्ण हैं:

1. यहाँ रोपवे की सुविधा दिया जा सकता है। इस सुविधा से पर्यटक कम समय में यहाँ के प्राकृतिक दृश्य का आनंद ले सकते हैं।
2. यहाँ ग्लास ब्रीज की सुविधा देने से पर्यटक एडवेंचर टूरिज्म का आनंद ले सकते हैं।
3. यहाँ टॉय ट्रेन की सुविधा उपलब्ध कराकर पर्यटकों को इसके सभी पहाड़ियों का आनंद दिलाया जा सकता है। इससे सैंकड़ो लोगों को रोजगार भी मिलेगा।
4. यहाँ पहाड़ी की यात्रा के लिये घोड़ों की सुविधा उपलब्ध कराने से पर्यटक अधिक संख्या में आकर्षित होंगें साथ हीं पर्यावरण प्रदुषित होने से बचेगा।

5. यहाँ स्थानीय लोगों,जैन समाज और सरकार के प्रतिनिधियों को शामिल कर एक वर्किंग कमिटी बनाकर यहां के किसी भी प्रकार की समस्याओं का निदान निकाला जा सकता है। इससे यहां पर्यटन का विकास भी होगा और तीर्थ भूमि की पवित्रता भी बनी रहेगी।
6. पारसनाथ को चिड़ियाँघर सफारी के रूप में विकसित किया जा सकता है, क्योंकि यहाँ जीव–जन्तुओं के लिए आवश्यक भौगोलिक दशाएँ उपलब्ध है।
7. जैनियों की पवित्र भूमि और आदिवासियों की जाहेरथान को देखते हुए इस क्षेत्र का विकास तीर्थाटन–पर्यटन क्षेत्र के रूप किया जाना ज्यादा अच्छा प्रतीत होता है।

संदर्भ सूची

1. Bansal, S.C., (2016-17) *'Tourism Geography & Travel Management',* Minakshi Publication, Meerut, 3rd ed.
2. Bhatt, S.C., (2002) *'The District Gazatteer of Jharkhand',* Gayan Publication, New Delhi, .
3. Deogam, S., (2017): 'Impact of Ecotourism (Theotourism) on forest of Parasnath Hill', https://www.semanticscholar.org, Accessed on 05-08-2024.
4. Kumar, M., (2016) 'lSj likVs ds u;s fBdkus, *Outlook Jharkhand,* November, 2016, p 46.
5. Ratheesh Mon, P. (2021) 'An introduction to the concept of landscape in Geography', *The Asian Review of Civil Engineering,* ISSN:2249-6203 Vol. 10 No.1, p.20-25.
6. Robinson, H., (1976): *'A geography of tourism'.* Ply mouth, Mac Donald and Evans', Ltd, https://www.Scribd.com, Accessed on 04-07-2024, p. 127.
7. Sarkar, P., (2018) *'Tourist spots in Jharkhand',* Rajesh Publication, New Delhi, .
8. Sethi, P., (1991) *'Tourism Planning and Development',* Rajat Publication, Delhi, p 216.
9. Singh, S.K., (2016) *झारखण्ड प्रदेश की भौगोलिक व्याख्याए,* Rajesh Publication, New Delhi.
10. Singh, S.K., (2019) *'Contemporary Research Methods and Their Applications',* Rajesh Publication, New Delhi.
11. Sharma, S.K. & Kumari, S., (2019) *'Tourism and Development in Jharkhand',* Rajesh Publication, New Delhi, 2nd ed.
12. Yadav, R. B., (2005) 'Plant Diversity and Ethno Botny at mount Parasnath and adjacent areas', http://hdl.handle.net/10603/168239, Accessed on 07-06-2024.
13. The Gazette of India, Ministry of Environment, Forest, and Climate Change Notification, New Delhi, the 2nd August, 2019.
14. https://www.latlong.net/place/giridih- jharkhand-india-15508.html, Accessed on 05/08/24.
15. https://www.mapsofindia.com/maps/jharkhand/districts/giridih.htm, Accessed on 08/08/24.
16. shikharjeeguide.blogspot.com, Accessed on 10/10/2024.

****